मोक्ष

"पापस्य वेतनं मरणं" (पवित्रशास्त्र-रोम 6:23)

श्री शिष्य थॉमसन द्वारा दिया गया प्रवचन

सभी धर्म समान है,

मैं समझता हूं कि सभी धर्म समान ही है और इसकी सच्चाई हमें नज़दीक से जाँच करने पर मिलती है। इसलिये यदि आप मुझे हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई या कुछ और ही क्यूँ न बुलाएं, मैं परेशान नहीं होता हूं। एक व्यक्ति यदि किसी धर्म से जुड़ा हुआ है, तो इसलिये नहीं कि वो उसे सत्य धर्म समझता है, या उसका धर्म सच्चा है। क्योंकि किस धर्म में उसे जन्म लेना है ये चुनाव करने में वह असमर्थ था। हर व्यक्ति चाहे वो किसी धर्म से क्यूं न जुड़ा हो, उसे पापों की क्षमा और मोक्ष की आवश्यक्ता है ताकि वो अनंत स्वर्ग राज्य में प्रवेश कर सके।

मानव जाति अपने स्वभाव और आवश्यक्ता में समान है सब मनुष्य पापी हैं, गिरे हुए हैं, और उनका परमेश्वर से सबंध टूटा हुआ है यह बात सच है, और इसका सबूत, हमारे चारों तरफ फैले अधर्म से मिलता है जिसे हम देखते और अनुभव करते हैं। हर व्यक्ति प्रकृति से पापी है, झूठ, धोखा, कामुकता, क्रोध, और हिंसा इत्यादि पाप, हमारे कर्म, विचारों और उद्देश्यों में भरे पड़े हैं। हमारे जीवन में पाप उसी तरह अदृश्य और छिपा रहता है, जैसे एक बीमारी का कीटाणु हमारी आँखों से दिखाई नहीं देता है। इसलिये हर मनुष्य पापी है।

हम धर्म की आधारभूत शिक्षाएं और लक्ष्य लगभग समान है सभी ईश्वर को सर्वशक्तिमान मानते हैं, सृष्टिकर्ता समझते हैं, हत्या, चोरी, हिंसा आदि का विरोध करते हैं। और सभी धर्म मनुष्य से भले कर्म करने का आव्हान् करते हैं। इससे समझ में आता है, कि धर्म एक अच्छे नैतिक संस्थान के समान है।

लेकिन बिना जीवित परमेश्वर के धर्म एक निर्जीव शरीर के समान है। और इस कारण धर्म किसी मनुष्य का न तो ईश्वर से मिलन करा सकता है, और न ही मोक्ष दिला सकता है।

धर्म में भटकना

धर्म मनुष्य द्वारा परमेश्वर की खोज का प्रयास है, शायद ऐसा है, कि परमेश्वर खो गया है, पर वास्तविकता इसके विपरीत है। यहां असीमित को पाने का प्रयास, सीमित कर रहा है। और यह असंभव है। धर्म एक विज्ञान के समान है, जो परमेश्वर और आध्यात्मिक सत्य को बुद्धि और ज्ञान द्वारा समझने की कोशिश करता है। उसी तरह जैसे बायलोजी से जीवित प्रणियों का अध्ययन या गणित से प्रश्न हल किये जाते हैं।

ब्रह्माण्ड का सृष्टिकर्त्ता

ब्रह्माण्ड की विशालता को देखें। उसमें अरबों नक्षत्र और गेलेक्सियाँ हैं, जो एक दूसरे से अरबों मील की दूरी पर रहती हैं और तारामंडल का कोई अंत नज़र नहीं आता है। अब सृष्टि की तुलना में तिनके के समान दिखने वाली हमारी धरती पर क्या हम सृष्टिकर्त्ता को भौगोलिक सीमा में सीमित कर सकते हैं? और यह भी सोचने लगें कि एक नहीं पर अनेक ईश्वर हैं, देशी ईश्वर और विदेशी ईश्वर, या मेरा ईश्वर और तुम्हारा ईश्वर पर यह विचारधारा संभव नहीं है।

धर्म या व्यापार

सत्य तो यह है कि परमेश्वर एक है और वह किसी भी सांसारिक धर्म से जुड़ा हुआ नहीं है। उससे

मिलने के लिये हमें अपने धर्म की चाहारदिवारी से बाहर निकलना होगा, क्योंकि धर्मो के प्रारम्भ से पहले ईश्वर जीवित है।

धर्म हाथ से बने भवनों और वस्तुओं से जुड़ा हुआ है। देखिये एक दूसरे के खिलाफ नफ़रत की आग और द्वेष का जहर धर्म के कट्टर लोग ही फैलाते हैं। और जब हिंसा करते हैं तो सोचते हैं कि परमेश्वर उनकी इन करतूतों से प्रसन्न होता है। चारों तरफ एक नज़र डालें, अधिकतर धार्मिक स्थल लालच, व्यापार और धनशक्ति के केन्द्र होते हैं।

और यहाँ पर याद करने वाली बात है, कि प्रभु-यीशु की हत्या का षडयंत्र धर्मगुरुओं ने यहूदियों के महान् मंदिर के मध्य के मीटिंग रूम में बैठकर ही किया था।

तंत्र मंत्र के पीछे कौन

धर्म के व्यापारी लोग कोई चमत्कार या तांत्रिक कार्य दिखाकर लोगों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। और अपने तंत्र मंत्र को हमेशा, ईश्वरीय शक्ति द्वारा किया बताते हैं। लेकिन हमें इसके मूल स्रोत की जाँच करनी चाहिये क्योंकि इसके पीछे शैतान या भूतप्रेतों की शक्ति हो सकती है। हर शक्ति ईश्वरीय नहीं है। और हर ऐसी शक्ति जिससे हम डरते हैं हमें उसकी भक्ति और सेवा नहीं करनी चाहिये, उसे खुश करने का प्रयास नहीं करना चाहिये। हमें जीवित परमेश्वर से सुरक्षा की प्रार्थना करनी चाहिये। हमारे धर्म का लिबास हमारे पाप को छिपाने का प्रयास करता है पर ये उसका इलाज नहीं है, बाहर से साफ सुथरा और सुंदर तो है, पर अंदर मृत्यु और दुर्गंध से भरा है।

यीशु मसीह का अद्भुत जीवन

इधर मैं ईष अवतार यीशु मसीह से संबंधित विचारों को प्रस्तुत करूंगा। वे हमेशा से धार्मिक विचारधाराओं से अलग थे और हैं। धर्म और यीशु मसीह के बीच हमेशा टकराव रहा। उन्होंने कभी भी किसी मनुष्य को किसी भी धर्म की दिशा में नहीं भेजा, या किसी धर्मपुस्तक की तरफ, पर मनुष्य को अपनी ओर बुलाया, और कहा मेरे पास आओ, और मेरे पीछे चलो, उनके अपने स्वयं के वचन इसके प्रमाण हैं। उन्होंने कहा

"अहमेव पन्था: सत्यश्च जीवनश्च नान्येनोपायेन
मनुष्य: पित: समीप मायाति, केवलं मया।"

"जिसका अर्थ है, मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूं बिना मेरे द्वारा कोई मनुष्य पिता परमेश्वर के पास नहीं पहुँच सकता" बाईबिल: यूहन्ना 14:6

अपने जीवन के द्वारा उन्होंने प्रमाणित किया कि वे ईश्वरीय अवतार है, जो मनुष्य को पापमोचन और मोक्षदान देने धरती पर स्वर्गलोग से आये हैं। उन्होंने पिता परमेश्वर की स्वर्गीय इच्छा को मनुष्य मात्र पर प्रगट किया। उन्होंने कहा, हे परिश्रम करने वाले और बोझ से दबे हुए लोगों मेरे पास आओ। मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। बाईबिल: मत्ती 11:28

प्रभु यीशु का आगमन चमत्कारिक और अद्भुत था। प्रभु यीशु इतिहास में आज से 2000 वर्ष पूर्व पैदा हुए। और जो कुछ उनके बारे में कहा और लिखा गया है वो कोई कथा कहानी नहीं, पर सच्ची घटनाएं हैं। भविष्यवाणियाँ जो हज़ारों वर्ष पूर्व उनके ऊपर लिखी गई थी, वो उनके जीवन में सत्य साबित हुई, उनका जन्म एक गरीब घर में, एक कुँवारी स्त्री मरियम से हुआ। इस तरह से जन्म उनके दिव्य स्वरूप का प्रमाण और परमेश्वर द्वारा दिया गया एक चिन्ह था।

यीशु मसीह और धर्म का संघर्ष

यीशु मसीह का संदेश अनोखा और अलौकिक था। उन्होंने पाप का पर्दाफाश किया और उस

पर परमेश्वर का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जैसे हत्या और क्रोध को बराबर का पाप बताया। कामुकता के विचार और व्यभिचार को एक कहा। बाहरी दिखावे और कपट की उन्होंने खिलाफत की, उन्होंने नया पवित्र जीवन जो परमेश्वर की आत्मा द्वारा संचालित है, जीने की आवश्यक्ता बताई।

धर्मगुरूओं के झूठ और दिखावे को उजागर किया। उन्होंने कहा ये जो शिक्षा देते हैं वो खुद उस पर अमल नहीं करते हैं। ये दान इसलिये देते हैं कि नाम कमा सकें, ये लंबी, रटी हुई प्रार्थनायें दोहराते रहते हैं ताकि लोग प्रभावित हो सकें। जब ये उपवास करते हैं, तो दूसरों को दिखाने के लिये करते हैं। ये लंबे चोगे पहनकर अपने आप को पवित्र और धर्मी दिखाने की कोशिश करते हैं। वे चाहते हैं, कि लोग उन्हें माला पहनाएं, आदर दें और गुरु बुलाएं।

धार्मिक उत्सवों में ये सबसे ऊपर बैठना चाहते हैं। प्रभु यीशु मसीह ने अपने जीवन और शिक्षा से बताया कि जो बड़ा बनना चाहता है, वो सबका सेवक बने। उसने स्वयं अपने शिष्यों के पाँव धोये, और अपने अनुयायियों को आदेश दिया कि वे भी इसी तरह की सेवाभाव का जीवन जीयें।

यीशु ने कहा, अपने दुश्मन से प्रेम करो, जो तुम्हें सताते हैं उनके लिये प्रार्थना करो, उन्होंने यहूदियों के मंदिर से व्यापारियों को बाहर निकाला और कहा कि ईश्वर का भवन डाकुओं का घर बना हुआ है।

उन्होंने पापियों से प्रेम किया, और पाप से फिरने का प्रचार किया, परमेश्वर के राज्य का प्रेम समाचार सुनाया। पाप और पुण्य के बारे में परमेश्वर के विचारों से मनुष्य को अवगत कराया। कहा पाप सिर्फ कर्म ही में नहीं, पर मन के विचारों में और उद्देश्यों में भी विद्यमान है।

यीशु मसीह के चमत्कार

अपने ईश्वरीय स्वरूप को प्रभु यीशु ने महान् चमत्कारों के द्वारा प्रगट किया, जो उन्होंने लोगों की भलाई के लिये किये, उन्होंने लोगों में नाम कमाने के लिये यह सब नहीं किया।

एक बार पानी पर जाते हुए समुंदर में आँधी तूफान आया। नाव डूब रही थी, और तब उन्होंने आँधी को आदेश दिया और वो थम गई, और समुंदर की लहरों को शांत किया। यीशु पानी पर भी चले, और सृष्टि पर अपने अधिकार को दर्शाया। एक बार पाँच हज़ार से अधिक भूखे लोगों को उन्होंने मात्र पाँच रोटियों को तोड़कर चमत्कार द्वारा भरपेट भोजन कराया। उन्होंने सब बीमारों को जो उनके पास आये उन्हें स्वस्थ किया। उन्होंने कोढ़ियों को छुआ और शुद्ध किया अंधों को आँखें दी, और मरे हुओं को जीवित किया। बहुत से लोग जो भूतग्रस्त थे, उनके द्वारा उन्हें आजादी मिली।

ईसाई धर्म की समस्या:

इसाई धर्म यीशु मसीह के स्वर्गारोहाण के 200 वर्ष बाद स्थापित हुआ। यह स्वरूप कुछ, राजनीतिज्ञों ने और उस समय के राज्यधिकारियों ने दिया, जो यीशु की अपनी शिक्षा के विपरीत था। यीशु ने धर्म प्रारंभ नहीं किया, आज ईसाई धर्म इसी कारण समस्या ग्रस्त है। आज बहुत हैं जो अपने रीतिरिवाज और स्वयं की शिक्षाओं का प्रचार ईश्वरीय, ठहराते हैं। और प्रभु यीशु के आत्मिक मोक्षमार्ग का तिरस्कार करते हैं। हर जगह सांसारिकता, और कपट फैला हुआ है। कथनी और करनी में एकता नहीं है। और वो प्रभु यीशु के शत्रु हैं, जो उनकी मूर्त्तियाँ बनाकर गिरजाघरों में स्थापित करते हैं। यह ईसाई धर्म का अधर्म है। परन्तु ये स्वरूप यीशु के सच्चे अनुयायियों का नहीं हैं। सच्चे विश्वासी तो दीनता से उस पर विश्वास के द्वारा पापो की क्षमा प्राप्त करके एक आत्मिक नया जीवन जी रहे हैं।

धर्म परिवर्तन और यीशु मसीह

प्रभु यीशु चाहते थे कि लोग परमेश्वर की तरफ मुड़ें धर्म की ओर नहीं, और उन पर विश्वास करें जिसे पिता परमेश्वर ने स्वर्ग से पापों की क्षमा और मोक्ष के लिये जगत में भेजा है, और पिता परमेश्वर द्वारा भेजे गऐ हर वचन पर भरोसा कर सके, विश्वास कर सके। वो धर्मगुरु जो स्वार्थी कारणों से धर्म परिवर्तन करने के लिये समुद्र पार करके दूर-दूर जाते हैं उनके बारे में उनका कहना है कि ये नये 'कनवर्ट' भी नरक के उसी तरह भागी होंगे जैसे उनके शिक्षक; क्योंकि वे ईश्वर की तरफ लोगों को नहीं लाते ताकि मोक्ष प्राप्त हो, पर धर्म की तरफ लाए हैं धार्मिक व्यवस्था के प्रभु यीशु खिलाफ थे परन्तु यीशु पर विश्वास के द्वारा पापों की क्षमा, और अनंत जीवन की प्राप्ति होती है।

क्रूस की मृत्यु का अर्थ-

पापस्य वेतनं मरणं किन्त्वस्माकं
प्रभुणा यीशु ख्रीष्टेनानंत जीवनम् ईश्वरदत्तं दानम् आस्ते

बाईबिल: रोमि. 6:23

परमेश्वर की घोषणा है कि पाप की मज़दूरी मृत्यु है। प्रभु यीशु ये मज़दूरी या कीमत अपनी कुरबानी द्वारा अदा करने धरती पर आए थे, क्रूस की मृत्यु उन्होंने मानवमात्र के लिये उठाई मृत्यु के उपरान्त तीसरे दिन वे कब्र से बाहर जीवित होकर आ गए, और यरूशलेम के सैकड़ों निवासियों को अपना दर्शन दिया, और चालीस दिन के उपरान्त यरूशलेम के बाहर एक पहाड़ पर से लोगों के देखते देखते उनका स्वर्गारोहण हुआ। जाने के पहले उन्होंने घोषणा की कि वे संसार का न्याय करने दोबारा धरती पर आयेंगे, हर इन्सान का हिसाब होगा। आज यदि आप यरूशलेम शहर में जाएंगे तो प्रभु यीशु की खाली कब्र देखने पाएंगे। प्रभु यीशु की क्रूस की मृत्यु, स्वर्गीय पिता परमेश्वर की योजना का अंग था जिसके द्वारा पापों की क्षमा और मोक्षदान का उपाय पाया जा सके, और परमेश्वर का प्रेम प्रगट हो। खुशखबरी यह है कि परमेश्वर हमारे पापी स्वभाव के बाद भी हमसे प्रेम करता है उसी तरह जैसे एक पिता अपनी बीमार संतान से प्रेम करता है। परमेश्वर हमें नया जीवन और मोक्षदान देना चाहता है कोई भी व्यक्ति चाहे किसी धर्म से ही क्यों न आया हो, यीशु का नाम ले सकता है और वह मुक्ति पा सकता है। प्रभु यीशु का पवित्र लोहू हमारे पापों के बदले दान स्वरूप अर्पित किया गया है। प्रभु यीशु के पास पाप क्षमा करने का अधिकार है।

मोक्ष प्रार्थना

हे प्रभु यीशु में कर्म से विचारों और उद्देश्यों से पापी हूँ, आप स्वयं परमेश्वर पुत्र बन कर आये आपने मेरे पापों की कीमत चुकाने के लिये अपना पवित्र खून बहाया और मृत्यु उठाई और आज आप जीवित हैं। आप मेरे पापों कों क्षमा करें मुझे नया जीवन दें।

अपनी पवित्र आत्मा का दानदें, ताकि मैं आपका जीवन पा सकूँ, और सिर्फ आपके मार्ग पर चल सकूँ। आज से मैं आपको अपना गुरु बनाता हूँ। मेरा आपके ऊपर संपूर्ण विश्वास और भरोसा है।

SHISHYASHRAM
305 D/A Sheeshmahal, Shalimar Bagh, New Delhi-110 088
e-mail:jawabjawab@yahoo.com

December 2006, 100000 Copies